

अध्याय- प्रथम

प्रस्तावना

- 1.1 विषय प्रवेश
- 1.2 शोध की आवश्यकता
- 1.3 समस्या कथन
- 1.4 शोध के उद्देश्य
- 1.5 शोध की परिकल्पनाएँ
- 1.6 शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा
- 1.7 शोध में प्रयुक्त चर
- 1.8 शोध की परिसीमाएँ

अध्याय प्रथम

प्रस्तावना

1.1 विषय प्रवेश:-

चिन्ता वस्तुतः भय के कारण उत्पन्न होती है। सामान्य जीवन में होने वाली किसी प्रकार की कठिन एवं उलझन पूर्ण परिस्थितियों, आदर्श एवं प्रतिष्ठा की रक्षा व्यक्ति के कल्याण तथा सुरक्षा में उत्पन्न बाधाओं की आशंका इत्यादि के कारण व्यक्ति स्वाभाविक रूप से भयभीत और चिन्तित हो जाता है। आज जिस गति से मानव जीवन का आधुनिकीकरण हो रहा है तथा उसके समक्ष अनेक प्रकार की उलझने आ रही हैं, कोई भी व्यक्ति चिन्ता से मुक्त नहीं है। इस प्रकार आधुनिक युग में मनुष्यों का चिन्तित होना सामान्य और स्वाभाविक है। जैसे बच्चे की बीमारी, परीक्षा का भय आर्थिक कठिनाईयाँ आदि से प्रायः प्रत्येक व्यक्ति चिन्तित होता है।

प्राचीन युग से मानव भयभीत होता आ रहा है। चिन्ता की प्रमुख विशेषता भय है क्योंकि भय के माध्यम से ही चिन्ता की उत्पत्ति होती है। बहुत से बालकों में चिन्तित रहने की आदत बन जाती है। वे यह सोचने लगते हैं कि वह जीवन में सुखी नहीं है। कोई भी आकस्मिक महत्वहीन घटना उनके मस्तिष्क पर बोझ बन जाती है और वह समझने लगते हैं कि उस घटना विशेष के परिणामस्वरूप उनका समस्त जीवन अंधकारमय हो जायेगा। इसी कारण वे अधिक चिन्ताग्रस्त होते हैं।

चिन्ता का अर्थ

चिन्ता शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द *Anxietas* से हुई है, जिसका अर्थ है –Experience of Varying blends of uncertainty and threat. मनोविज्ञान में इस शब्द को सर्वप्रथम लाने का श्रेय फ्रायड (1894) को है। में (R.May. 1950) के अनुसार इस शब्द का उपयोग सन् 1930 तक बहुत कम हुआ, इसका उपयोग केवल मनोविश्लेषक ही किया करते हैं। मनोविज्ञान की पुस्तकों के इन्डेक्स में भी Anxiety शब्द नहीं हुआ करता था। चिन्ता के संबंध में फ्रायड का विचार था कि शारीरिक यौन तनावों (Somatic Sexual Tensions – Libido) के दमन के परिणाम स्वरूप चिन्ता की उत्पत्ति होती है।

फ्रायड (1936) ने अपने बाद के लेखों में चिन्ता शब्द का विस्तृत अर्थों में उपयोग किया है। इस संबंध में कुछ अधिक कहने से पहले आवश्यक होगा कि चिन्ता के अर्थ को समझ लिया जाय।

चिन्ता की परिभाषाएँ :

1. मे. (1950) के अनुसार :- “भय के संकेत की अनुभूति की कोई मात्रा जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अस्तित्व के लिए आवश्यक समझता है, चिन्ता कहलाता है।”

"The apprehension cued off by a threat to some value the individual holds essential to his existence as a personality"

R.May (1950)

2. सुलीवान (1953) के अनुसार :- “चिन्ता तनाव की वह अवस्था है, जो अन्तः वैयक्तिक संबंधों के अनुभवों से उत्पन्न होती हैं।”

Anxiety is the state of tension arising from the experience of disapproval in inter personal relation."

H.S. Sullivan (1953)

3. स्पाइलबर्गर (1960) के अनुसार:- "चिन्ता उदोलन की वह अवस्था है, जो भय से बचने के कारण उत्पन्न होती है।"

Anxiety can be defined as a state of arousal caused by threat to well being."

- Spielberger. (1960)

स्पाइलबर्गर की उपर्युक्त परिभाषा में अवस्था का अभिप्राय उस दशा से है जिनमें सम्पूर्ण व्यक्ति सम्मिलित है। इसी प्रकार उदोलन का अर्थ तनाव की दशा, बेचैनी अथवा अनुकिया के प्रतिक्रिया करने की तत्परता से है। भय का अभिप्राय भय अथवा पीड़ा के पूर्व अनुमान से है। आधुनिक युग में चिन्ता का एक महत्वपूर्ण प्रत्यय तथा परिवर्त्य है क्योंकि आजकल के प्रत्येक व्यक्ति में यह लक्षण थोड़ी अथवा बहुत मात्रा में दिखाई देता है। जटिल कार्यों में निष्पादन तथा शैक्षिक उपलब्धि की चिन्ता से घनिष्ठ संबंध है।

चिन्ता के प्रकार :-

स्पाइलबर्गर (1962) ने चिन्ता के दो प्रकार बताएँ हैं -

1. Trait Anxiety -

इस प्रकार की चिन्ता व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक शीलगुण है। कैटेल (R.B.Catell, 1962) ने इस प्रकार की चिन्ता का वर्णन Second order personality Factors-I के द्वारा किया है। जिस व्यक्ति में इस प्रकार की चिन्ता अधिक मात्रा में होती है वह

कम खतरनाक परिस्थिति को भी अधिक खतरनाक परिस्थिति के रूप में प्रत्यक्षीकृत करते हैं। यह चिन्ता अपेक्षाकृत स्थायी होती है।

2. State Anxiety -

इस प्रकार की चिन्ता अपेक्षाकृत अस्थायी और परिवर्तनशील होती है। सामान्य जीवन में इस प्रकार की चिन्ता निम्न स्तर की रहती है। परन्तु किसी खतरनाक उद्दीपक के उपस्थित होते ही इस प्रकार की चिन्ता का स्तर बढ़ जाता है। स्पाइलबर्गर (1962) के अनुसार “चिन्तात्मक अवस्था से तात्पर्य आत्मगत एवं चेतन रूप से प्रत्यक्षीकरण की गई इस तनाव एवं आशंका की भावना से है जो स्वचालित नाडी मण्डल (ANS) के सक्रिय होने से संबंधित होती है।”

चिन्ता को प्रभावित करने वाले कारक -

चिन्ता को प्रभावित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं।

1. सामाजिक आर्थिक स्तर
2. शहरी एवं ग्रामीण जीवन
3. कुण्ठा
4. संवेगात्मकता
5. पारिवारिक वातावरण
6. विद्यालय का वातावरण
7. व्यक्ति का स्वास्थ्य
8. सेक्स
9. बुद्धि
10. आत्म प्रत्यय
11. हीनता की भावना
12. शैक्षिक उपलब्धि आदि।

शैक्षिक चिन्ता -

वर्तमान में चिन्तित अवस्था दैनिक जीवन का एक सामान्य तत्व बन गया है। यह मानव जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है क्योंकि हम सभी लोग किसी न किसी तरह की चिन्ता की अवस्था में रहते हैं जो कि विभिन्न प्रकार से हम से संबंधित है (Goodstein and Lanyon, 1975) सामान्यतः चिन्ता की अवस्था गुणों से संबंधित या चरणों से संबंधित होता है। गुणों से संबंधित चिन्ता स्थिर विशेषता लिये हुए या व्यक्ति के गुणों से संबंधित होती है।

शैक्षिक चिन्ता स्टेट चिन्ता का एक प्रकार है, शैक्षिक चिन्ता आनेवाले खतरे से जुड़ी होती है। जो कि शैक्षिक संस्थाओं के पर्यावरण से संबंधित है। इसमें शिक्षक तथा कुछ विषयों को शामिल किया जाता है। जैसे- गणित व अंग्रेजी इत्यादि।

1.2 शोध की आवश्यकता -

विद्यार्थी ने परीक्षा में पास न होने के बाद खुदकुशी की। परीक्षा के तनाव से ट्रेन के नीचे कुदकर एक विद्यार्थी ने जान दी। ऐसी खबरे अखबार में हम अक्सर पढ़ते हैं। अभिभावक भी अपने बच्चों से उसकी क्षमता से ज्यादा अपेक्षा रखते हैं। इस कारण से विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता बढ़ रही हैं। इसलिये इस अध्ययन की आवश्यकता है।

आजकल शालेय मूल्यांकन में शैक्षिक उपलब्धि को कुछ ज्यादा ही महत्व दिया जाता है। इसलिये अभिभावक एवं शिक्षक शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिये प्रयास करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि विद्यार्थी को शैक्षिक चिन्ता का सामना करना पड़ता है। इस शैक्षिक चिन्ता का असर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या होता है? शैक्षिक चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में क्या सह-संबंध है? उच्च

शैक्षिक चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या परिणाम होता है? निम्न शैक्षिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम या ज्यादा रहती है? इस प्रकार के प्रश्न मेरे मन में आ रहे थे इसलिए मैंने यह अध्ययन किया है।

1.3 समस्या कथन –

“कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन”

1.4 शोध के उद्देश्य –

1. विद्यार्थियों का चिन्ता स्तर ज्ञात करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन करना।
3. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. विद्यार्थियों के शैक्षिक चिन्ता स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता की तुलना करना।
7. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

1.5 शोध की परिकल्पनाएँ –

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
2. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. विद्यार्थियों के शैक्षिक चिन्ता स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

1.6 शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा–

1. शैक्षिक चिन्ता

शैक्षिक चिन्ता स्टेट चिन्ता का एक प्रकार है, शैक्षिक चिन्ता आनेवाले खतरे से जुड़ी होती है जैसे शैक्षिक वातावरण, शाला एवं शालाओं से जुड़े अध्यापक तथा कुछ विषय गणित और अंग्रेजी इत्यादि।

2. शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ यह है कि छात्र ने किस अंश तक विद्यालय द्वारा निश्चित किये गये उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है, उनकी जानकारी लेना है, वह जानकारी आँकड़ों, मात्रा एवं श्रेणी में व्यक्त की जाती है।

1.7 शोध में प्रयुक्त चर –

प्रस्तुत अध्ययन में शोध चर निम्नलिखित है।

स्वतंत्र चर – शैक्षिक चिन्ता

लिंग – (छात्र एवं छात्राएं)

क्षेत्र – (ग्रामीण एवं शहरी)

आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

1.8 शोध की परिसीमाएँ–

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल पन्डरपुर तहशील के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन प्रारंभिक स्तर तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिन्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि तक ही सीमित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन केवल 106 प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है। जिनमें 54 ग्रामीण एवं 52 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी हैं।